श्री पंच महागुरु भक्ति

(पद्यानुवाद- आचार्य विमर्शसागर)

राजा सुर नागेन्द्र कराते धारण तीन छत्र जिन पर।
गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्षसुख-कल्याणक-पाये जिनवर।।
वे जिनेन्द्र हमको भी देवें अचल अनंत-ज्ञान-दर्शन।
अविनाशी अनुपम अनंतबल मंगलमयी ध्यान अर्हन्।।1।।

प्रकट किया जिनने अतिदृढ़ हो ध्यानरूप अग्निमय बाण।
जला दिये हैं जन्म-मृत्यु तीनों ही नगर महान।।
स्वयं हुआ है प्राप्त जिन्हें अविनाशी अनुपम मुक्ति थान।
देवें उत्तम बोध मुझे भी ऐसे सर्व सिद्ध भगवान्।।2।।
दर्शन-ज्ञान-चरित्र-वीर्य-तप पंचाचार अनल नित साध।
अवगाहन करते हैं नित ही द्वादशांग श्रुतजलधि अगाध।।
आशा की अभिलाषा तजकर पाया जिनने मुक्ति धाम।
मोक्ष लक्ष्मी देवें मुझको सूरि चरण में करूँ प्रणाम।।3।।
अतिशय भीषण दुःखमय सारा महाभयानक भवजंगल।
जहाँ दिखाते तीक्ष्ण नखों युत पापसिंह बल टहल-टहल।।
भव अटवी में भूल गये जो भव्य जीव पा लिये कुपथ।
वंदन उन श्री उपाध्याय को जिनने उन्हें दिखाया पथ।।4।।
क्षीण किया इस नश्वर तन को करके उग्र तपश्चर्या।
दुर्लभ उत्तम धर्मध्यान औ शुक्लध्यान को प्राप्त किया।।
रत्नत्रय में रमण करें जो तपो अंगना करे वरण।
मोक्षमार्ग दर्शायक होवें वंदनीय साधु भगवन्।।5।।

जो यह संस्तुति निशदिन पढ़कर करता पंचगुरु वंदन।
वह अनंतभव सघन-बेल का पलभर में करता छेदन।।
जला डालता पुण्य-पापमय अष्टकर्म वन ईंधन को।
पाता मोक्ष महल सुख वह जो मान्य रहा उत्तम जन को।।6।।
घाति कर्म को नाश कर पाया पद-अर्हन्त।
कर्म-अघाति नाशकर हुये सिद्ध-भगवन्त।।
पंचाचार छत्तीस - गुण धरि आचार्य महान्।
पठन और पाठन निरत उपाध्याय भगवान्।।
ज्ञान-ध्यान-तपलीन जो हैं भवजलधि जहाज।
सुर-नर-किन्नर से अहा! वंदित साधूराज।।
ऐसे पंचमहागुरु इनको नित नवकार।
भव-भव में इनसे करूँ मंगल की दरकार।।7।।

(अंचलिका)

पंचगुरु भक्ति का मैंने, कायोत्सर्ग किया भगवन्।
उसके ही आलोचन की अब, इच्छा करता मेरा मन।।
अष्ट प्रातिहार्यों से मण्डित, परमदेव अर्हत् भगवन्।
ऊर्ध्वलोक के मुकुट विराजे अष्टगुणों के सिद्ध सदन।।
अष्ट महाप्रवचन माता से संयुत हे आचार्य परम!
आचारादि-श्रुत-उपदेशक, उपाध्यायजी ज्ञान वरम्।
रत्नत्रय गुण के पालन में तत्पर साधु सदा-सदा।
नित्यकाल करता हूँ अर्चा, पूजन, वंदन, नमन अहा।।
हे प्रभु! मेरे भव दुःखों का क्षय हो क्षय हो क्षय होवे।
हे प्रभु! मेरे सब कर्मों का क्षय हो, क्षय हो क्षय होवे।
हे प्रभु! मुझको बोधि लाभ हो, सदा सुगति में होय गमन।
हे प्रभु! पाऊँ मरण समाधि, जिन गुण संपत्ति निजधन।।

पंच महागुरु के चरण वंदन का उल्लास।
पंचमहागुरु की शरण मिले यही अरदास।।1।।
पंच महागुरु भक्ति का किया पद्य अनुवाद।
गुरु विराग आशीष से हो न लेश अनवाद।।2।।
पंच महागुरु ही रहें जीवन के आधार।
कर्म नशें यह भावना यही शुद्ध सुविचार।।3।।